एपिसोड - 22
गर्माता विश्व और विस्थापन की समस्या
या
ग्लोबल वार्मिंगए स्थापन और शरणार्थी समस्या

मुख्य शोध एवं आलेख - डॉ० आरण्एसण् यादव
हिंदी अनुवाद - श्रीमती सविता यादव

भाग लेने वाले कलाकार :-

1.	डॉ० कृष्णा	(50 वर्ष)	-	प्रिंसिपल
2.	श्रीमती प्रभा	(45 वर्ष)	-	समाज शास्त्र की प्राध्यापिका
3.	प्रो० जितेन्द्र	(55 वर्ष)	-	पर्यावरण वैज्ञानिक
4.	रमेश	(18 वर्ष)	-	छात्र
5.	महेश	(21 वर्ष)	-	महाविद्यालय में छात्र
6.	सोनाली	(18 वर्ष)	-	छात्रा

धारावाहिक संगीत

दृश्य 1 : एक साधारण भारतीय घर / टी.वी. पर समाचार / रसोई घर से बर्तन / प्रेशर कूकर आदि की ध्वनि /

रमेश : हे भगवान् इतना सारा काम ! उसके ऊपर स्कूल का प्रोजेक्ट कार्य विद्यालय की वार्षिक डिबेट भी नजदीक आ रही है ! इस बार तो मुझे जीतना ही है !

प्रभा : रमेश मैंने तुम्हारा नाश्ता तैयार किया है कहा हो आप ? खाना खाने की मेज पर लगा दिया है I पिछले सप्ताह क्या कहा था याद है ? मैं वार्षिक डिबेट की बात कर रही हूँ I उसकी तिथियाँ आ गई हैं I तुमने नोटिस बोर्ड पर पढ़ा होगा I

रमेश : मम्मी ! मैं अपने कुछ नोट तलाश कर रहा था मेरे कक्षा अध्यापक ने दिए थे !

प्रभा : किन पेपर की बात कर रहे हो ! मेरे से ही पूछ लेते ? मैंने वो सारे पेपर ! तुम्हारे कमरे की आलमारी में रखे थे !

रमेश : वो मम्मी ! मैंने कहा था ना मेरे पेपर को मत छुआ करो ! प्लीज ! जहाँ पर पड़े हैं वहीं रहने दिया करो !

प्रभा : बेटे ! तुमने पढ़ा होगा ना की अपनी पुस्तक और कॉपियों को उचित स्थान पर रखना चाहिए ! किसी प्रतियोगिता में विजय के

लिए घरेलू अनुशासन का होना भी जरुरी है ! इससे जीवन की समस्यायें भी कम हो जाती हैं !

रमेश : O.K. मम्मी ! Please No more lesson, मेरे पर पहले ही काम का बहुत दबाव है I

प्रभा बेटे ! सभी चीजों को सहजता से लेना सीखो ! वैसे भी तुम स्कूल में अच्छा कर रहे हो I

रमेश : Sorry मम्मी ! मुझे समझ में आ गया ! आपने मेरी सारी पुस्तकें और कॉपियाँए इतने अच्छे से जो रख दी हैं !

प्रभा: अच्छा ! मुझे बताओगेए तुम्हारी डिबेट का विषय क्या है ? अवश्य ही कोई ज्वलन्त विषय होगा ?

रमेश : हाँ माँ I मेरे लिए तो ये नया ही है I परन्तु आपके लिए नहीं मैं अभी बताता हूँ मेने अपनी नोट बुक में लिखा था I

*************पेपर के पन्ने पलटने का ध्वनि प्रभाव***********

प्रभा: अच्छा I खाने की मेज पर आओ I और अपना नाश्ता कर लो I

रमेश : अच्छा मम्मी ! मैं अभी आया I इस बार डिबेट का विषय है ***'ग्लोबल वार्मिंगए विस्थापन और शरणार्थी समस्या'***, हमारी कक्षा अध्यापक ने बताया है कि यह विश्व की वर्तमान उभरती हुई समस्या पर केन्द्रित है I इसमें विश्व परिदृश्य, ग्लोबल वार्मिंग, और उससे उपजती शरणार्थियों की समस्या जुड़ी हुई है I

प्रभा: (हँसते हुए) अच्छा है और रुचिकर विषय है ! इसने राजनैतिकों की और वैज्ञानिकों की नींद उड़ा दी है I

रमेश : मम्मी ! नेता और वैज्ञानिक ही क्यों ?

प्रभा: रमेश I वैसे तो आम लोग ज्यादा प्रभावित होते हैं, परन्तु मेरे कहने का अभिप्राय था कि राजनेताए नीतियाँ बनाते हैं और वैज्ञानिक इसका आधार बताते हैं I

*************बस हॉर्न का ध्वनि प्रभाव***********

रमेश : मम्मी मुझे लगता है मेरे स्कूल की बस आ गई है, मुझे तुरंत जाना होगा नहीं तो बस प्रभारी नाराज़ हो जाएगा I

प्रभा: तुम्हारा लंच बॉक्स तैयार है I भूल मत जाना I मैं विद्यालय में देरी से आऊँगी I मुझे शिक्षा निदेशालय में एक बैठक के लिए जाना है I

रमेश : अच्छा मम्मी …..Bye…

प्रभा: …..Bye…अपना ध्यान रखना I

********बस चलने / गेट बन्द होने का ध्वनि प्रभाव********

दृश्य - 2 : ***प्रातः काल / प्रार्थना स्थल / असेम्बली संगीतद्ध***

डॉ० कृष्णा : प्रिय विद्यार्थियो, मैं आज मुख्य बिन्दु पर चर्चा करने से पहले बताना चाहूँगा कि राजधानी क्षेत्र में पर्यावरण प्रदूषण की समस्याए दिन प्रतिदिन कितनी गंभीर होती जा रही है I विश्व के सबसे अधिक प्रदूषित शहरों में तीन शहर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र से आते हैं I ये एक गम्भीर समस्या है जिसे हम सब मिलकर ही दूर कर सकते हैं I सरकार अपने स्तर पर सभी कदम उठा रही है I परन्तु परिणाम कोसों दूर हैं I यदि चीन में बीज़िंग, थाईलैंड में हांगकांग और इंग्लैंड में लन्दन की प्रदूषण की समस्या दूर हो सकती है तो हम क्यों नहीं कर सकते हैं ! इसके लिए आवश्यकता है अच्छी नीतियों की और नागरिकों की सहभागिता की I अब मैं आज के मुद्दे पर आता हूँ I हाँ मैं बात कर रहा हूँ वार्षिक डिबेट की इसमें लगभग तीन दर्जन विद्यालयों और कुछ महा. विद्यालयों की टीमों ने भाग लिया है I हमारे विद्यालय के छात्र मिस्टर नरेश ने फाइनल में स्थान बना लिया है I मैं उसी को विस्तार से बताने के लिए आमंत्रित करता हूँ I

रमेश : धन्यवाद सर ! दोस्तो आप सभी ने नोटिस बोर्ड पर देखा होगा इस कमइंजम की फाइनल स्टेज का विषय है ***Global Warming Refugees*** है यानी ग्लोबल वार्मिंग से बढ़ती शरणार्थी समस्या I इसमें मनुष्य ही नहीं, दूसरे जीव जन्तु और पेड़.पौधों को भी शामिल कर सकते हैं I इस समस्या का असर कुछ क्षेत्रों में तो स्पष्ट दिखने लगा है I संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार इसके गम्भीर नतीजे हो सकते हैं I संसाधनों की कमी, भोजन और पानी की किल्लत आने वाले समय में आम समस्या बनकर उभर सकती है I मेरे लिए ये गर्व की बात है कि मैं अपने स्कूल का प्रतिनिधित्व करने जा रहा हूँ I मैं और मेरे सभी दोस्त उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं जिस दिन इसका आयोजन होगा I मिल रहे सहयोग और प्रोत्साहन के लिए स्कूल प्रशासन और आप सभी का बहुत धन्यवाद I

********तालियों का ध्वनि प्रभाव *********

डॉ० कृष्णा : (प्रिंसिपल) क्या आत्मविश्वास है वाह ? आप सभी को मालूम होना चाहिए की वर्तमान में आपदाओं के कारण प्रति सेकंड एक व्यक्ति बेघर हो रहा है I सोमालिया में सूखे के कारण सन 2011-2012 में पकिस्तान में 2010 और 2012 में आई बाढ़ और नेपाल में 2015 के भूकम्प के कारण लाखों लोगों को अपना घर बार छोड़ना पड़ा है हालाँकि ग्लोबल वार्मिंग की समस्या नयी है परन्तु आने वाले समय में यह और विकराल हो सकती है I इसके लिए हमें अभी से कदम उठाने पड़ेंगे I

**********ध्वनि परिवर्तन********

दृश्य 3 : **(प्रातःकाल का समय) विद्यालय का ऑडीटोरियम / विद्यार्थियों की चहल पहल / पक्षियों की चहचाहट**

प्रभा: हैल्लो (माइक की गूँज) हैल्लो.....
दोस्तो नमस्कार ! मेरी आवाज़ सुनाई दे रही है ?

कृपया शांत हो जाएँ माइक टेस्टिंग कर लें I अंतिम पंक्ति में बैठे छात्रों को आवाज़ सुनाई दे रही है ! एक स्वर में हां मैडम सुनाई दे रही हैं I सभी प्रतिभागी आगे की पंक्ति पर आ जाएँ I हमारे मुख्य अतिथि प्रो० जितेन्द्र जी पहुँच चुके हैं और वो प्राचार्य कक्ष में बैठे हैं जल्दी ही वो यहाँ पहुँचने वाले हैं I हाँ मैं उन्हें देख पा रही हूँ वे हॉल में प्रवेश कर रहे हैं I जोरदार तालियों से सभी का स्वागत I

************ध्वनि प्रभाव तालियाँ******

प्रभा: नमस्कार ! स्वागत ! कार्यक्रम शुरू करते हैं ! हम आगे बढें उससे पहले प्राचार्य महोदय डॉ० कृष्णा से निवेदन है किए पुष्प गुच्छ देकर हमारे मुख्य अतिथि को सम्मानित करें !

***********तालियों का ध्वनि प्रभाव ********

आप सभी जानते हैं हम यहाँ क्यों आये हैं वार्षिक डिबेट प्रतियोगिताए हमारे विद्यालय की पहचान है I यह आयोजन कई चरणों में सभी आयु वर्ग के विद्यार्थियों के लिए किया जाता है I इस बार तीन दर्जन से ज्यादा स्कूल और कालेजों ने इसमें भाग

लिया है I मैं प्राचार्य महोदय से निवेदन करती हूँ कि वे आएँ और प्रोत्साहन स्वरूप दो शब्द कहें I

******* *तालियाँ* ******

डॉ० कृष्णा : नमस्कार अभिनंदन दोस्तो इस प्रकार के आयोजन से प्राचार्य आप सभी को नयी जानकारियाँ तो मिलती ही हैं साथ में विश्व स्तर पर चल रहे प्रयासों से भी अवगत होने का मौका मिलता है ! 14 मार्च 2019 को एक दैनिक समाचार पत्र में पढ़ने को मिलाए कि किस प्रकार ग्लोबल वार्मिंग और प्रदूषण की समस्या से लाखों लोगों को अकाल मौत का सामना करना पड़ रहा है! ये और किसी की नहीं संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट पर आधारित लेख था ! इस रिपोर्ट को 70 से अधिक देशों के 250 से ज्यादा वैज्ञानिकों ने तैयार किया है ! मुझे आशा है कि आज की इस चर्चा में इस प्रकार नये मुद्दे उभर कर सामने आयेंगे जिससे समस्या का कारगर निदान सम्भव हो सके !मैं विद्यालय की आयोजन समिति का इस आयोजन के लिये भी आभारी हूँ जिससे हमारे विद्यार्थी आगे चलकर अहम् भूमिका निभा सकेंगे ! सभी प्रतिभागियों को ढ़ेर सारी शुभकामनायें !

*****तालियाँ* ******

प्रभा: धन्यवाद सर मैं सभी प्रतिभागियों को अपनी सीट पर बैठने के लिए स्टेज पर आमंत्रित करती हूँ

********ध्वनि प्रभाव *******

पर्यावरण वैज्ञानिक डॉ० जितेन्द्र जी आज विशेषज्ञ संचालक और निर्याणक की भूमिका निभाएंगे ! प्रो० जितेन्द्र कृपया स्टेज पर अपना स्थान ग्रहण करें ! और Opening Remarks के लिए कृपया माइक पर आएँ I

प्रो० जितेन्द्र; हँसते हुए Hello Everybody… नमस्कार ! आशा करता हूँ कि सभी प्रतिभागी तैयार होंगे ! Be Relaxed.. आज की डिबेट थोड़ी भिन्न होगी ! इसके तीन भाग होंगे ! पहले भाग में प्रतिभागियों को सीधे सीधे अपनी बात कहनी है ! दूसरा राउंड रेपिड फायर क्विज़ के रूप में होगा और अंतिम भाग में गिने चुने शब्दों में सारांश पर पहुंचना है ! प्रभा जी स्कोर का ध्यान रखेंगी ! सभी तैयार हैं I

********ध्वनि प्रभाव रुरु******

प्रभा: ठीक है डॉ० जितेन्द्र जी, केवल ये ध्यान रखें कि डॉ० जितेन्द्र का निर्णय फाइनल होगा I

प्रो० जितेन्द्र : धन्यवाद प्रभा जी रू करते हैं I पहला प्रतिभागी रमेश अपनी बात कहें ....

**********ध्वनि प्रभाव **********

रमेश : नमस्कार ! Good Morning… मैं अपनी बात अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति ज़नाब बराक ओबामा के एक कथन से शुरू करता हूँ…एक सच्चाई है जो इस सदी की पहचान बन गई है और वो है मौसम में बदलाव I इसकी भयावहता इसी से जानी जा सकती है जब पैरिस समझौते मेंए 190 से अधिक देशों के वैज्ञानिकों ने इसकी तरफ सभी देशों के राज्याध्यक्षों का ध्यान आकर्षित किया कि यदि ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन इसी प्रकार रहा तो पृथ्वी को अपने मूल स्वरुप में लाना असम्भव होगा ! यह एक बहुत बड़ी विभीषिका होगी जिसे ठीक करना नामुमकिन होगा ! आपदाओं से बचने के लिए और भोजन पानी के लिए लोगों को नये स्थानों की ओर कूच करना पड़ सकता है ! एक ऐसी त्रासदा जिससे शान्ति भंग होगी I

इसका सबसे अच्छा उदहारण मध्य अमेरिका से संयुक्त राज्य अमेरिका आने वाले प्रवासियों को लिया जा सकता है I इसकी विस्तार से चर्चा लेखक और पत्रकार टोड मिल्लर ने अपनी पुस्तक ***Storming The Wall*** में किया है ! ग्लोबल वार्मिंग के कारण आने वाले अकाल सूखा बाढ़ चक्रवात जमीन का धँसना जैसी समस्यायें मध्य अमेरिका की समस्या को और विकराल बना सकती हैं ! मौसम वैज्ञानिक दक्षिण अमेरिका के मध्य भाग को ***ग्राउंड जीरो*** के रूप में ले रहे हैं ! यह दोनों तरफ से समुद्र से घिरा है ! ग्लोबल वार्मिंग का इस क्षेत्र में पड़ने वाले देशों पर सबसे अधिक पड़ेगा ! एक अध्ययन से पता चला है कि सन 2050 तक मैक्सिको के 10 लोगों में से एक व्यक्ति विस्थापितों की श्रेणी में होगा ! हमारे देश में भी कुछ पर्यावरणविद हिमालय और उत्तर पूर्व के क्षेत्रों को लेकर अध्ययन कर रहे हैं ! ग्लोबल वार्मिंग कोई भविष्यवाणी नहीं है ! यह एक सच्चाई है जो हमारे सामने घट रही है ! इसी के साथ मैं विराम देना चाहूँगा I धन्यवाद !

**********तालियाँ ********

प्रो० जीतेन्द्र: सही समय पर विराम... हँसते हुए रमेश हमारे अगले प्रतिभागी हैं मिस्टर महेश आपका स्वागत है !

महेश : Good morning everybody... ग्लोबल वार्मिंग की समस्याए बहुत ही सुन्दर ढ़ंग से फिल्म ***Climate Refugees*** में बताई गई है

! पिछले सप्ताह ही मैंने अपने दोस्तों के साथ देखा है ! यह पहली ऐसी फिल्म है जिसमें मौसम परिवर्तन के कारण प्रभावित लोगों पर रोशनी डाली गयी है ! इसमें राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पड़ने वाले राजनैतिक प्रभावों को बखूबी उठाया गया है ! ग्लोबल वार्मिंग कोई कल्पना नहीं है हमारे सामने मुहँ बायें खड़ी समस्या है ग्लोबल इस सदी के मध्य तक लाखों लोग अपने घरों को छोड़ने के लिए विवश हो जायेंगे I

परन्तु सवाल उठता है कि, एक देश से दूसरे देश में विस्थापित होने वाले लोगों के लिए क्या व्यवस्था की गई है I ग्लोबल वार्मिंग से हो रहे विस्थापित शरणार्थियों की संख्याए आज कहीं ज्यादा है ***Climate War*** जैसी शब्दावली कुछ देशों में आज गूँज रही है I बांग्लादेश चीन, चाढ़, फ़िजी, सूडान, कीनिया, मालद्वीप, यूरोप और अमेरिका में फिल्माई गयी यह फिल्म, तथ्यों पर आधारित है, जो एक खतरनाक स्थिति की ओर इशारा करती है I परन्तु प्रश्न उठता है किए क्या हम आने वाली स्थिति का सामना करने के लिए तैयार हैं ? रहने के लिए हमारे पास एक ही ग्रह है I हमारा नैतिक दायित्व है कि आने वाली पीढ़ियों को हम अपने इस ग्रह को उसी रूप में देंए जैसा हमें अपने पूर्वजों से मिला था I

****धन्यवाद****

प्रो० जितेन्द्र: जिस प्रकार से धारा प्रवाह - महेश बोल रहे थे मुझे लगा उसे रोकने के लिए बजर बजाना ही पड़ेगा I परन्तु समय का पूरा ख्याल ! धन्यवाद मिस्टर महेश I और हमारे अगले प्रतिभागी हैं - सोनाली.....

सोनाली : ***Hello...everyone*** ! मैं अपनी बात को उस जगह से शुरू करना चाहूँगी जहाँ महेश ने छोड़ा है, अब हमारा एक ही ध्येय होना चाहिए वो है पृथ्वी की सुरक्षा ! हाँ हमारा ये दायित्व बनता है कि हम अपनी इस पृथ्वी को आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित और जैसा हमने लिया था उसी रूप में सौंपें I यदि ग्लोबल वार्मिंग की समस्याए ऐसे ही बनी रही तो सन 2050 तक 15 करोड़ से लेकर 100 करोड़ तकए लोगों के विस्थापित होने की समस्या सामने आ सकती है I ये ऐसी स्थिति होगी जो इससे पहले इस ग्रह पर कभी नहीं घटी I
हम अपने पर्यावरण को कार्बन डाई ऑक्साइड गैस से भर रहे हैं जिससे तापमान बढ़ता है और पृथ्वी ग्रह गर्म हो रहा है I ये कार्बन कहाँ से आ रहा है ? जैवाश्म ईंधन को काम में लेने से वैज्ञानिक इससे सहमत हैं कि मानव की गतिविधियाँ ही ग्लोबल

वार्मिंग को बढ़ावा दे रही हैं हम विस्थापित शरणार्थियों की बात तो करते हैं परन्तु कभी आपने जानने का प्रयास किया कि बांग्लादेश और मालद्वीप इस आपदा को झेलने वाले देशों में सबसे ऊपर आते हैं I एक अनुमान के अनुसार सन 2050 तक बांग्लादेश का 17% भू-भाग जल-मग्न हो जायेगा और 2 करोड़ आबादी विस्थापित शरणार्थियों की श्रेणी में शामिल हो जायेगी I
ये समस्या मनुष्यों की ही नहीं बल्कि दूसरे जीव जंतु पेड़ पौधे भी इस श्रेणी में जुड़ते चले जा रहे हैं I 3000 के आस पास जीव जन्तु और वनस्पतियों की प्रजातियाँ अपने मूल स्थानों से विस्थापित हो चुकी हैं I वो नये स्थानों पर जाने के लिए स्वतन्त्र हैं परन्तु मानव नहीं I इस परिवर्तन की सबसे बड़ी त्रासदी यही है किए जो देश सबसे अधिक पर्यावरण को हानि पहुंचा रहे हैं वे दूर भाग रहे हैं I

*******रुरु बज़र का ध्वनि प्रभाव रुरु*********

प्रो० जितेन्द्र: तुम्हारा समय समाप्त हुआ...धन्यवाद सोनाली ! सभी प्रतिभागियों ने बहुत अच्छी प्रस्तुतियाँ दी हैं I अब समय है अगले राउंड का I किसी सटीक निर्णय पर पहुँचने के लिए रैपिड फायर सेक्शन शामिल किया गया है I मैडम प्रभा प्रश्न करेंगी और बज़र की घन्टी मेरे हाथ में रहेगी .....(हँसते हैं)

*********बज़र का ध्वनि प्रभाव *******

प्रभा: सभी तैयार हैं I "पहला सवाल है - किस वर्ष को अंतर्राष्ट्रीय विस्थापित वर्ष की पहचान मिला है" I

सोनाली : कई मायनों में वर्ष 2018 को इस श्रेणी में लिया जा सकता है I सुरक्षा और शरण पाने के लिए लाखों लोग मध्य अमेरिका, अफ्रीका, पश्चिमी एशियाई देशों से संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड की ओर प्रस्थान कर रहे हैं I

प्रो० जितेन्द्र: बहुत सुन्दर I

प्रभा: संयुक्त राष्ट्र संघ के एक अनुमान के अनुसार सन 2050 तक करोड़ों लोग घर छोड़ने के लिये विवश हो जायेंगे ***Climate refugees*** ज्यादातर किन क्षेत्रों से आ रहे हैं ?

सोनाली : ***Climate*** से विस्थापित होने से लोग ज्यादातर कम विकसित क्षेत्रों से आते हैं I जैसे अफ्रिका एशिया और दक्षिण अमेरिका I परन्तु त्रासदी देखिये इन्हें शरणार्थी और विस्थापितों की श्रेणी में नहीं लिया जाता है I

प्रो० जितेन्द्र: ***Well done*** हमारा अगला सवाल है.....

प्रभा: ज्यादातर इसके लिए ***Climate refugees*** शब्द प्रयोग में लाया जाता है, परन्तु इन विस्थापितों को शरणार्थियों की श्रेणी में नहीं गिना जाता है.....ऐसा क्यों ?

********ध्वनि प्रभाव रुरु********

महेश : संयुक्त राष्ट्र ने अपनी एक बैठक में इसके बारे में कुछ निर्णय लिए हैं सन 2015 के पैरिस सम्मलेन में एक टास्कफोर्स का गठन किया गया जिसका काम ग्लोबल वार्मिंग से होने वाले विस्थापितों के बारे में सुझाव देना था I विभिन्न देशों को इस बारे में ठोस कदम उठाने के लिए और ग़रीब देशों को विकसित राष्ट्रों द्वारा आर्थिक मदद करना - इसके सुझावों में शामिल किया गया I

प्रो० जितेन्द्र: धन्यवाद - और अब समय है अंतिम चरण का प्रतिभागियों को सारांश में एक या दो वाक्यों में अपनी बात कहनी है I रमेश - शुरू करें....

रमेश : मेरे विचार में ग्लोबल वार्मिंग की लड़ाई हम सब की है हम सबका सामूहिक दायित्व है- जिसमें देर करना, खतरे की घंटी समान है समय निकल रहा है कहीं गाड़ी छूट न जाये उसे पकड़ने का पूरा ध्यान रखना है I

महेश : आने वाली हमारी पीढ़ी हमारा आंकलन एक गलत पागल इंसान के रूप में करेगी, यदि हम अपना नैतिक दायित्व निभाने में चूक गए, हमें ग्लोबल वार्मिंग और इससे होने वाले विस्थापन से हर हालत में लड़ना ही होगा I

सोनाली : भगवान ने रहने के लिए हमें एक ही ग्रह दिया है I मानव को इसे समझना होगा I हमारा एक ही ध्येय होना चाहिये - वो है सुरक्षित धरती जिसको जिस रूप में हमने पाया है उसी रूप में आने वाली पीढ़ियों को हस्तान्तरण भी करना है I इस धरती माँ की सुरक्षा करना हमारी जिम्मेदारी है नहीं तो हम सभी इतिहास में दबकर समाप्त हो जायेंगे I

प्रो० जितेन्द्र: इसी के साथ सम्पन्न होती है हमारी ये डिबेट I जब तक प्रभा जी परिणाम तैयार करे मैं प्राचार्य महोदय को माइक देता हूँ I

प्रिंसिपल : प्रो० जितेन्द्र जी धन्यवाद - अति सुन्दर अति उत्साह से भरपूर सभी प्रतिभागियों ने बड़े अच्छे से अपने विचार रखे कुछ राजनेता

इसे हव्वा मान रहे हैं विज्ञान को झूठा बता रहे हैं और इसे काल्पनिक भय बता रहे हैं I ग्लोबल वार्मिंग और इसके कारण हो रहा विस्थापन एक सच्चाई है I एक ऐसी सच्चाई जिसे झुठलाया नहीं जा सकता है I प्रो० जितेन्द्र आपको प्रतिभागियों को सभी अध्यापक और अभिभावकों को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद.... परिणाम मेरे हाथ में आ गया है....और आज के विजेता हैं मिस सोनाली ..... जोरदार तालियाँ ....

प्रभा: धन्यवाद डॉ० कृष्णा, अब मैं आप सभी को चाय कॉफ़ी और नाश्ते के लिए आमंत्रित करती हूँ I इसकी व्यवस्था ऑडीटोरियम के बाहर की गयी है, सभी छात्रों का धन्यवाद और आभार I

.....**ध्वनि प्रभाव**.....

.....**धारावाहिक संगीत**.....